INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 12 | JANUARY – 2025

झारखंड राज्य के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का आध्यात्मिक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, रामगढ जिले के सन्दर्भ में

संजय प्रभाकर कुमार[1] , डॉ. बाबूराम मौर्य [2]
[1]शोधकर्ता, शिक्षा विभाग, साईनाथ विश्वविद्यालय,रांची, झारखंड.
[2]शोधनिर्देशक, प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, साईनाथ विश्वविद्यालय, रांची, झारखंड.

शोध–सारांश:

प्राचीन काल से लेकर आज तक मनुष्य मशिा का उपयोग अपने वैयतिक और सामाजिक विकास के लिए कर रहा है। शिक्षा के द्वारा ही मानव अपने स्मृति भंडार को सुरक्षित रखता है तथा अपने विचारों एिं भावनाओं को दूसरों तक पहांचाता है। यूँ तो शिक्षा जीवन–पर्यन्त मानव का किसी न किसी रूप में विकास करती रहती है परन्तु विद्यालयीय जीवन में इसका महत्त्व एवं उत्तरदायित्व और भी अधिक बढ़ जाता है। यह विद्यार्थियों के भौतिक एवं शैक्षिक विकास के साथ–साथ उनके आध्यात्मिक विकास के मार्ग को भी प्रशस्त करती है। यह कार्य शिक्षा के प्राथमिक से लेकर माध्यमिक और उच्च स्तर तक अबाध रूप से चलता रहता है।

शिक्षा के इन कायों और महत्त्व को देखते हए शोधकर्त्ता द्वारा माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले विद्यार्थिथ्यों की आध्यात्मिक बुद्वि तथा शैक्षिक उपलध्बि का अध्ययन करने का निश्चय किया गया। इसके लिए झारखण्ड बोर्ड से मान्यता–प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों की दसवीं कक्षा में अध्ययनरत 400 विद्यार्थिथ्यों का चयन उनके लिंग एवं निवास–स्थान को ध्यान में रखते हुए स्तरीकृत यादृश्चिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया। इन चयनित विद्यार्थिथ्यों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलमब्धि जानने के लिए उन पर के. एस. मिश्रा द्वारा निर्मित आध्यात्मिक बुद्वि मापनी और शोधकर्त्ता द्वारा विकमसत सामाजिक विज्ञान उपलबिध परक्षिण पुस्तिका को उपकरण के रूप में प्रशासित किया गया और इन पर प्राप्त अंकों को व्यवस्थित किया गया। तत्पश्चात इन प्राप्ताांकों के लिए क्रांतिक अनुपात परीक्षण और सहसंबंध गुणांक की गणना किया गया। गणना से प्राप्त परीणामों के द्वारा यह ज्ञात हआ कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों और छात्राओं तथा ग्रामीण और शहरी विद्यार्थिथ्यों के बीच उनके आध्यात्मिक बुद्वि के संबंध में सार्थक अंतर था। इसी प्रकार छात्रो और छात्राओं की शैक्षिक उपलमधध में भी साथयक आंतर पाया गया परन्तु ग्रामीण और शहरी मिद्यार्थथयों की शैमिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं दिखाई दिया। अध्ययन के परीणामों ने यह भी सिद्व किया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्वि उनके शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक और सार्थक रूप से प्रभामित करती है।

मुख्य शब्द: माध्यमिक स्तर, आध्यत्मिक बुद्वि, शैक्षिक उपलब्धि, छात्र, छात्राएँ, ग्रामीण, शहरी,विद्याथी।

प्रस्तावना:

शिक्षा मानव समाज के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण और सर्वव्यापी विषय है। यह मानव की एक विशेष और अद्वितीय उपलब्धि है। प्राचीन काल से लेकर आज तक मनुष्य शिक्षा का उपयोग अपने वैयतिक और सामाजिक विकास के लिए कर रहा है। शिक्षा के द्वारा ही मानव अपने स्मृति भंडार को सुरक्षित रखता है तथा

अपने विचारों एवं भावनाओं को दूसरों तक पहुंचाता है, जिसे औपचाररक रूप में सम्प्रेषण कहा जाता है। यह सम्प्रेषण साांकेतिक, मौखिक अथवा लिखित किसी भी रूप में हो सकता है। यूँ तो शिक्षा जीवन–पर्यन्त मानव का किसी न किसी रूप में विकास करती रहती है परन्तु विद्यालयीय जीवन में इसका महत्त्व एवं उत्तरदायित्व और भी अधिक बढ़ जाता है। यह छात्रों का सर्वांगीण विकास करने में उनकी सहायता करती है। यह उनके भौतिक, आध्यात्मिक, नैतिक, चारित्रिक, सामाजिक इत्यादि सभी पक्षों को उचित दिशा देती है और उनके उचित विकास के लिए जमीन तैयार करती है। किसी भी समाज और राष्ट्र के विकास के यह आवश्यक है कि उसके नागरिक भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से सम्पन्न हों । यह सम्पन्नता उनके अंदर तभी आ सकती है जब इसका विकास उनके अंदर उनके विद्यालयीय जीवन से ही किया जाए।

शिक्षा ने सामाजिक विकास के हर युग और समय में समाज को दिशा और स्वरूप देने में सहायता की है। मनुष्य के सर्वोच्च आर्दशों तथा मूल्यों को इसने प्रवाहित और प्रभामित किया है। विद्यालय समाज का लघु रूप होता है। जैसे समाज में विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तर और भौगोलिक क्षेत्रों वाले तथा अलग–अलग धर्मों को मानने वाले लोग रहते है, ठीक उसी प्रकार विद्यालय में अध्ययन हेतु आने वाले विद्यार्थियों का सामाजिक–आर्थिक स्तर, भौगोलिक क्षेत्र तथा जाति एवं धर्म आदि भिन्न–भिन्न होते है। विद्यालय में पढने वाले प्रत्येक विद्यार्थी दिखने में एक–समान लगते है, लेकिन व्यतिगत गुणों के आधार पर परस्पर भिन्न होते है वैयतिक गुणों में भिन्नता के कारण उनकी विद्यालय में शैक्षिक और बौद्विक उपलब्धि के साथ आध्यात्मिक उपलब्धि में भी भिन्नता पाई जाती है। विद्यार्थियों के उचित विकास के लिए यह जरुरी है कि उनका शैक्षिक और आध्यात्मिक दोनों हि समान रूप से विकमसत हो। शैक्षिक विकास के लिए पाठ्यक्रम और शैक्षिणक वाक्याओं को विकमसत किया जाना जरुरी है, जबकि आध्यात्मिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्वि और चारित्रिक शक्ति को उचित दिशा दिया जाए। यह कार्य विद्यार्थियों के बाल्यकाल से ही शुरू कर देना चाहिए और धीरे–धीरे इसका विस्तार करना चाहिए। राबर्य एम्मन्स आध्यात्मिक बुद्वि को "दैनिक समस्या समाधान और लक्ष्य प्राप्त की सुविधा के लिए आध्यात्मिक जानकारी का अनुकूली उपयोग" के रूप में पररभाषित करते हैं।

वर्तमान समय में मनोवैज्ञानिक शोधों ने यह सिद्व कर दिया है कि वैयतिक विभिन्नता का ज्ञान बालक के विकास में अहम भूमिका निभाता है। यह उसके शैक्षिक उपलब्धि को भी प्रभाभित करता है। हमने किसी कार्य अथवा क्रिया को कितना सीखा, इसका ज्ञान उपलब्ध के द्वारा ही होता है। मनोवैज्ञानिक परक्षिणों की श्रृंखला के प्रयोग मे आने वाली उपलब्धि काशैक्षिणक जीवन में बहत ही महत्वपूर्ण स्थान है। विद्यार्थियों के चयन, उन्नमत तथा तुलनात्मकअध्ययन आदि में इन परीक्षणों का प्रयोग बहत अधिक किया जाता है। शैक्षिक उपलब्धिविद्यालयों में विषय संबंधी अर्थति ज्ञान का परीक्षण है। सामान्यतः शैक्षिक उपलब्धि का अर्थहोता है– ज्ञान प्राप्त करना तथा कौशल एवं क्रियाओं का विकास करना। शैक्षिक उपलब्धिके द्वारा शिक्षण कार्य की कुशलता एवं सफलता का ज्ञान होता है तथा पता चलता है किशिक्षण कितना प्रभवि रहा है। इससे विद्यार्थियों के बौद्विक स्तर का पता चलता है।

शोध–समस्या की कथन

आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि के उप्युर्क्त विवरण का अध्ययन करने के पश्चात यह स्पष्ट होता है कि ये दोनों ही कारक बालक के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।चूँकि भिन्न–भिन्न बालकों मे वैयतिक विभिन्नता के कारण शैक्षिक उपलब्धि और आध्यात्मिक बुद्वि भिन्न– भिन्न मात्रा में पाई जाती है। परन्तु यह भिन्नता किस रूप और स्तर में पायी है, यह एक विचारणीय प्रश्न है। इसी प्रश्न का उत्तर ढूँढने के प्रयास में शोधकर्ता के मन में शोध से सम्बन्धित कुछ प्रश्न उत्पन्न हुए जो निम्नलिखित हैं–

- क्या माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों और छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्वि में कोई अंतर होता है अथवा नहीं?
- क्या माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्वि में कोई आंतर होता है अथवा नहीं?
- क्या माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अंतर होता है अथवा नहीं?

- क्या माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई आंतर होता है अथवा नहीं?
- क्या माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की आध्यात्मिक बुद्वि उनके शैक्षिक उपलब्धि को प्रभाभित करती है अथवा नहीं?
- क्या माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्वि उनके शैक्षिक उपलब्धि को प्रभाभित करती है अथवा नहीं?
- क्या माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थथयों की आध्याममक बुद्वि उनके शैक्षिक उपलब्धि को प्रभामित करती है अथवा नहीं?
- क्या माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्वि उनके शैक्षिक उपलब्धि को प्रभाभित करती है अथवा नहीं?

वर्तमान शोध–अध्ययन उपरोक्त वर्णित प्रश्नों का उत्तर ढूँढने का प्रयास है। अतः शोध–समस्या के कथन को निम्नाांकित प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है–

'झारखंड राज्य के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का आध्यात्मिक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, रामगढ जिले के सन्दर्भ में'

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों और छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्वि में सार्थक अंतर का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्वि में सार्थक अंतर का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सम्म्बन्ध का अध्ययन करना।
6. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध का अध्ययन करना।
7. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध का अध्ययन करना।
8. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थथयों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलमब्धि
9. में सार्थक सम्बन्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाए

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों और छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्वि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण और शहरी विद्यार्थथयों की आध्यात्मिक बुद्वि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

6. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
7. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
8. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलबिध में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

महत्त्वपूर्ण पदों की संकियात्मक परिभाषा

- **माध्यमिक स्तरः**– प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर से तात्पर्य झारखण्ड बोर्ड से मान्यता–प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों की दसवीं कक्षा' से है।
- **आध्याममक बुद्विः**– प्रस्तुत शोध में आध्यात्मिक बुद्वि से तात्पर्य के.एस. मिश्रा द्वारा निमित 'आध्यात्मिक बुद्वि मापनी' पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों से है।
- **शैक्षिक उपलब्धिः**– प्रस्तुत शोध में शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य शोधकर्ता द्वारा निमित 'सामाजिक विज्ञान उपलब्धि परीक्षण पुस्तिका' पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों से है।

अध्ययन की परीसीमाए

- जनसंख्या के चयन के लिए केवल ऐसे माध्यमिक विद्यालयों को शोध में लिया गया जो झारखण्ड बोर्ड से मान्यता–प्राप्त थे।
- प्रतिदर्श के चयन के लिए केवल ऐसे माध्यमिक विद्यालयों को लिया गया जो रामगढ जिला में स्थित थे।
- प्रतिदर्श के रूप में के लिए ऐसे विद्यार्थियों को चयनित किया गया जो माध्यमिक विद्यालयों की दसवीं कक्षा में संस्थागत–विद्याथी के रूप में पंजीकृत थे।

अध्ययन की विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसन्धान के अंतर्गत आने वाली सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

अध्ययन के चर

प्रस्तुत शोध में अनुसांधान के उद्देश्यों के अनुरूप आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि को मुख्य चर तथा लिग (महिला और पुरुष) एवं निवास–स्थान (ग्रामीण और शहरी) को जनसाांख्यिकीय चर के रूप में स्वीकार किया गया है।

अध्ययन के उपकरण

वर्तमान अध्ययन में आकड़ों के संग्रहण के लिए निम्नाांकित शोध–उपकरणों का प्रयोग किया गया– आध्यात्मिक बुद्वि मापनीः– माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आध्यात्मिक बुद्वि के मापन के लिये डॉ. के. एस. मिश्रा द्वारा निमित 'आध्यात्मिक बुद्वि मापनी' का प्रयोग किया गया। यह एक लिकर्ट–प्रकार का उपकरण है जिसमें अनुक्रिया करने के लिये पांच विकल्प दिए गये हैं जो इस प्रकार हैं– पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत एवं पूर्णतः असहमत। इन अनुक्रियाओं के लिए अंक देने की प्रक्रिया को सारणी सांख्या (1) में दिखाया गया है।

सारणी सांख्या–1: आध्यात्मिक बुद्वि मापनी के लिए अंकन की प्रक्रिया

पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतः असहमत
5	**4**	**3**	**2**	**1**

इस उपकरण का विश्वसनीयता मान स्प्लिट हाफ विधि द्वारा .852 तथा क्रानबैक अल्फा द्वारा .874 पाया गया।

सामाजिक विज्ञान उपलब्धि परीक्षण पुस्तिकाः– विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि मापने के 'सामाजिक विज्ञान उपलब्धि परीक्षण पुस्तिका' का निर्माण स्वयं शोधकर्त्ता द्वारा किया गया। इस परीक्षण के निर्माण के लिए इतिहास एवं नागरिकशास्त्र से सम्बन्धत कुल 145 प्रश्नों का चयन किया गया। प्रत्येक प्रश्न के लिए चार अनुक्रिया–विकल्प दिए गये जिसमें से केवल एक ही विकल्प सही था। प्रत्येक सही अनुक्रिया के लिए 1 अंक एवं गलत अनुक्रिया के लिए 0 अंक देने का प्रावधान किया गया।

पद–विशलेषण के बाद इनमें से कवेल 50 प्रश्न ही मानक के अनुरूप पाए गयें जिनको परीक्षण के अंतिम प्रारूप में सम्मिलित किया गया। इन 50 प्रश्नों की विश्वसनीयता 'अर्द्व–विच्छेद विश्वसनीयता' विधि से ज्ञात की गई जो .92 थी। इस परीक्षण–पुस्तिका की वैधता का निर्धारण सम्बन्धत क्षेत्र के आठ विषय–विशेषज्ञों के सुझावों एवं सहमति के आधार पर किया गया।

जनसंख्या एवं प्रतिदर्श

प्रस्तुत अध्ययन में ऐसे सभी विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में स्वीकार किया गया जो यूपी.बोर्ड से मान्यता–प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों की दसवीं कक्षा में पढ़ रहे थें। प्रतिदर्श का चयन 'स्तरीकृत यादृश्चिक प्रतिचयन' विधि द्वारा किया गया। इसके लिए, सर्वप्रथम रामगढ जिले में संचालित एवं झारखंड बोर्ड से मान्यता–प्राप्त दस माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया। तत्पश्चात इन विद्यालयों से दसवीं कक्षा में अध्ययनरत 400 विद्यार्थियों का चयन उनके लिग तथा निवास–स्थान को ध्यान में रखते हए किया गया।

सारणी सांख्या–2: लिग एवं निवास–स्थान के आधार पर प्रतिदर्श का वितरण

लिंग / निवास–स्थान	ग्रामीण	शहरी	कुल
छात्र	100	100	200
छात्राएं	100	100	200
योग	200	200	400

शोध में प्रयुक्त साांख्यिकीय प्रविधियां

वर्तमान अध्ययन में आकडों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक मिचलन, दो मध्यमानों के बीच के अंतर की प्रमाणिक त्रुटि सी. आर. परीक्षण और गुणनफल आघूर्ण सहसम्बन्ध गुणाांक का प्रयोग किया गया।

आकड़ों का विश्लेषण एवं परिणामों की व्याख्या

वर्तमान अध्ययन में आकडों का विश्लेषण उद्देश्यों के अनुसार निम्नलिखित तरीके से किया गया–

उद्देश्य –1: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों और छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्वि में सार्थक अंतर का अध्ययन करना।

H01– माध्यममक स्तर पर अध्ययनरत छात्रो ं आरै छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्वि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी सांख्या–3: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों और छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्वि में सार्थक अतंर का विवरण

समूह	N	M	S.D.	SED	df	टी का मान		साथर्कता स्तर
						TV	CV	
छात्र	200	162.63	25.13	2.51	398	2.59	3.47	0.01
छात्रायें	200	171.34	25.07					

उपरोक्त सारणी सांख्या (3) से यह पता चलता है कि माध्यमिक स्तर के छात्रों और छात्राओं के समूह के लिए आध्यात्मिक बुद्वि मापनी पर मध्यमान क्मशः 162.63व 171.34 और मानक विचलन 25.13 व 25.07 है।

इन दोनों समूहों के लिए उनके मध्यमानों के अंतर की प्रमाणिक त्रटि का मान 2.51 तथा सी. आर. परीक्षण का परिकलित– मान 3.47 है, जो .01 सार्थकता के सारणी–मान 2.59 से बड़ा है। अतः .01 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना "माध्यममक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों और छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्वि में कोई सार्थक अंतर नहीं है" को अस्वीकार किया गया तथा वैकिल्पक शोध–परिकल्पना को स्वीकार किया गया।

इससे यह स्पष्ट हआ कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्वि में सार्थक अंतर है। अर्थात छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्वि छात्रों से अधिक है।

उद्देश्य–2: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण और शहरी विद्यार्थथियों की आध्यात्मिक बुद्वि में सार्थक अंतर का अध्ययन करना।

H02– माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्वि में कोई सार्थक आंतर नहीं है।

सारणी सांख्या–4: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्वि में सार्थक अंतर का विवरण

समूह	N	M	S.D.	SED	df	टी का मान		साथर्कता स्तर
						TV	CV	
ग्रामीण	200	170.0	24.99	2.51	398	1.97	2.40	0.05
शहरी	200	163.97	25.21					

उपरोक्त सारणी सांख्या (4) से यह पता चलता है कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के समूह केलिए आध्यात्मिक बुद्वि मापनी पर मध्यमान क्मशः170.00 व 163.97 और मानक विचलन 24.99 व 25. 21 है। इन दोनों समूहों के लिए उनके मध्यमानों के अंतर की प्रमाणिक त्रुटि का मान 2.51 तथा सी. आर. परीक्षण का परिकलित–मान 2.40 है, जो .05 साथर्कता के सारणी–मान 1.97 से बड़ा है। अतः .05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण और शहरी विद्याथर्थियों की आध्यामत्कि बुद्वि में कोई सार्थक आंतर नहीं है" को अस्वीकार किया गया तथा वैकल्पिक शोध–परिकल्पना को स्वीकार किया गया। इससे यह स्पष्ट हआ कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले ग्रमीण और शहरी विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्वि में सार्थक अंतर है। अर्थात ग्रामीण विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्वि शहरी विद्यार्थथियों से अधिक है।

उद्देश्य–3: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक आंतर का अध्ययन करना।

H03 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक आंतर नहीं है।

सारणी सांख्या–5: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर का विवरण

समूह	N	M	S.D.	SED	df	टी का मान		साथर्कता स्तर
						TV	CV	
छात्रों	200	27.45	8.37	0.80	398	2.59	5.4	0.01
छात्राओं	200	31.77	7.56					

उपरोक्त सारणी सांख्या (5) से यह पता चलता है कि माध्यमिक स्तर के छात्रों और छात्राओं के समूह के लिए सामाजिक विज्ञान उपलब्धि परीक्षण पुस्तिका पर मध्यमान क्मशः 27.45 व 31.77 और मानक विचलन 8. 37 व 7.56 है। इन दोनों समूहों के लिए उनके मध्यमानों के अंतर की प्रमाणिक त्रुटि का मान 0.80 तथा सी. आर. परीक्षण का परिकलित–मान 5.4 है, जो .01 साथर्कता के सारणी–मान 2.59 से बड़ा है। अतः .01 सार्थकता स्तर पर शून्य पररकल्पना "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है" को अस्वीकार किया गया तथा वैकल्पिक शोध– परिकल्पना को स्वीकार किया गया।

इससे यह स्पष्ट हुआ कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले छात्रों और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। अर्थात छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि छात्रों से अधिक है।

उद्देश्य–4: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण और शहरी विद्यार्थथियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर का अध्ययन करना।

H04 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण और शहरी विद्यार्थथियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी सांख्या–6: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण और शहरी विद्यार्थथियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर का विवररण

समूह	N	M	S.D.	SED	df	टी का मान		साथर्कता स्तर
						TV	CV	
ग्रामीण	200	29.43	8.12	0.79	398	1.97	0.46	0.05
शहरी	200	29.79	7.67					

असार्थक

उपरोक्त सारणी सांख्या (6) से यह पता चलता है कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण और शहरी विद्यार्थथियों के समूह के लिए सामाजिक विज्ञान उपलब्धि परीक्षण पुस्तिका पर मध्यमान क्मशः 29.43 व 29.79 और मानक विचलन 8.12 व 7.67 है। इन दोनों समूहों के लिए उनके मध्यमानों के आंतर की प्रमामणक त्रुटि का मान 0.79 तथा सी. आर. परीक्षण का परिकलित–मान 0.46 है, जो .05 सार्थकता के सारणी–मान 1.97 से छोटा है। अतः . 05 साथयकता स्तर पर शून्य परिकल्पना "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण और शहरी विद्यार्थथियों की शैमिक उपलब्धि में कोई सार्थक आंतर नहीं है" को स्वीकार किया गया तथा वैकल्पिक शोध–परिकल्पना को अस्वीकार किया गया। इससे यह स्पष्ट हआ कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले ग्रामीण और शहरी विद्यार्थथियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है। अर्थात ग्रामीण विद्यार्थथियों की शैक्षिक उपलब्धि शहरी विद्यार्थथियों की शैक्षिक उपलब्धि के बराबर है।

उद्देश्य–5: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध का अध्ययन करना।

H05 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

सारणी सांख्या–7: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध का विवररण

समूह	प्रथम चर	द्वितीय चर	N	'r' का परिकल्पत मान	साथर्कता स्तर
छात्र	आध्यात्मिक बुद्वि	शैक्षिक उपलब्धि	200	0.296	0.01

उपरोक्त सारणी सांख्या (7) से यह पता चलता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सहसंबंध गुणाांक का मान .296 है जो .01

सार्थकता स्तर के सारणी–मान .181 से अधिक है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना "माध्यममक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की आध्याममक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि में कोईसार्थक सम्बन्ध नहीं है" को .01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकार किया गया तथा वैकल्पिक शोध–परिकल्पना को स्वीकार किया गया। अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य एक सार्थक और सकारात्मक सहसंबंध पाया गया।

उद्देश्य–6: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध का अध्ययन करना।

H06 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

सारणी सांख्या–8: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध का विवरण

समूह	प्रथम चर	द्वितीय चर	N	'r' का परिकल्पत मान	साथर्कता स्तर
छात्राएं	आध्यात्मिक बुद्वि	शैक्षिक उपलब्धि	200	0.317	0.01

उपरोक्त सारणी सांख्या (8) से यह पता चलता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सहसंबंध गुणाांक का मान .317 है जो 01 सार्थकता स्तर के सारणी–मान .181 से अधिक है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि में कोई साथयक सम्बन्ध नहीं है" को .01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकार किया गया तथा वैकल्पिक शोध–परिकल्पना को सि्वकार ककया गया। अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य एक सार्थक और सकारात्मक सहसंबंध पाया गया।

उद्देश्य–7: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थथियों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध का अध्ययन करना।

H07: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थथियों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

सारणी सांख्या–9: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थथियों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध का विवरण

समूह	प्रथम चर	द्वितीय चर	N	'r' का परिकल्पत मान	साथर्कता स्तर
ग्रामीण विद्यार्थी	आध्यात्मिक बुद्वि	शैक्षिक उपलब्धि	200	0.429	0.01

उपरोक्त सारणी सांख्या (9) से यह पता चलता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थथियों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सहसंबंध गुणाांक का मान 0.429 है जो 0.01 सार्थकता स्तर के सारणी– मान 0.181 से अधिक है। इस आधार पर शून्य पररकल्पना "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थयों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलिब्ध में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है" को .01

साथकता स्तर पर अस्वीकार किया गया तथा वैकल्पिक शोध–परिकल्पना को स्वीकार किया गया। अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थथयों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य एक सार्थक और सकारामक सहसंबंध पाया गया।

उद्देश्य–8: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थथयों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध का अध्ययन करना।

H08 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थथयों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

सारणी सांख्या–10: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थथयों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध का विवरण

समूह	प्रथम चर	द्वितीय चर	N	'r' का परिकल्पत मान	साथर्कता स्तर
शहरी विद्यार्थी	आध्यात्मिक बुद्वि	शैक्षिक उपलब्धि	200	0.209	0.01

उपरोक्त सारणी सांख्या (10) से यह ज्ञात हुआ कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थथयों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सहसंबंध गुणांक का मान 209 है जो .01 सार्थकता स्तर के सारणी–मान. 181 से अधिक है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना ;भ्08द्ध– "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थथयों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है" को .01 साथयकता स्तर पर अस्वीकार किया गया तथा वैकल्पिक शोध–परिकल्पना को स्वीकार किया गया। अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थथयों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलबिध के मध्य एक सार्थक और सकारात्मक सहसंबंध पाया गया।

निष्कर्ष एवं शैक्षिक उपयोगिता:

वर्तमान शोध–अध्ययन के परिणामों के आधार पर निम्नांकित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थथियों के बीच उनके आध्यात्मिक बुद्वि के सन्दर्भ में सार्थक अंतर पाया गया। यह अंतर उनके लिग और निवास–स्थान दोनों के परिप्रेक्ष्य में सार्थक था। अर्थात
- महिला और ग्रामीण विद्यार्थथियों की आध्यात्मिक बुद्वि क्मशः पुरुष और शहरी विद्यार्थथियों की आध्यात्मिक बुद्वि से अधिक पाई गयी।
- माध्यमिक स्तर के पुरुष और महिला मिद्यार्थथयों की शैमिक उपलमधध में साथयक अंतर पाया गया। अथायत ममहला मिद्यार्थथयों ने पुरुष विद्यार्थथियों की तुलना में अधिक शैक्षिक उपलब्धि अर्जित की। दूसरी तरफ, ग्रामीण और शहरी विद्यार्थथियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर दृष्टिगोचर नहीं हआ।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थथयों की आध्यात्मिक बुद्वि और शैक्षिक उपलब्धि के बीच धनात्मक एवं सार्थक संबंध पाया गया। अर्थात इन विद्यार्थथियों की आध्यात्मिक बुद्वि ने उनके शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभाभित किया।

वर्तमान अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षा एवं समाज के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्व होगें। इसके परिणामों से लाभ उठाकर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थथियों को इस प्रकार शिक्षा दिया जा सकता है, जिससे कि उनकी आध्यात्मिक बुद्वि का स्तर उच्च हो। फलस्वरूप उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अपेक्षाकृित अच्छी होगी। इसके लिए उनके पाठ्यक्मों और शौक्षिणक गतिविधियों में आवश्यक सुधार और संशोधन किया जाना जरुरी है। साथ ही जिन विद्यार्थथयों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न है, उनको अतिरिक्त सहायता और व्यतिगत परामर्श दिया जाना चाहिए।

भावी शोध हेतु सुझाव:

- इसी अध्ययन को अर्पेकृित एक बड़े प्रतिदर्श पर किया जा सकता है जिससे और व्यापक सामान्यीकरण प्राप्त हो सके । साथ ही समान अध्ययन को शिक्षा के अन्य स्तरों जैसे, उच्च माध्यमिक स्तर, स्नातक स्तर, स्नातकोत्तर स्तर तथा शिक्षक–शिक्षा के स्तरों पर किया जाना चाहिए।
- आध्यात्मिक बुद्वि तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन अन्य चरों जैसे– मानसिक स्वास्थ्य, व्यकित्व ,समायोजन, बुद्विलबिध, संवेगात्मक बुद्वि इत्यादि के साथ किया जा सकता है।
- समान अध्ययन सांस्था के प्रकार (सरकारी एवं स्ववित्तपोषित) तथा उनके अिस्थिति (नगरीय एवं ग्रामीण) के सन्दर्भ में किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. सिह, ए.के . (2015). शिक्षा मनोविज्ञान. पटना भारती भवन.
2. सिह, ए.के . (2015). मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां पटना मोतीलाल बनारसीदास.
3. गुप्ता, एस.पी. (2015). अनुसन्धान सांदर्शिका. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन.
4. शर्मा, आर.ए. (2014). शिक्षा अनुसन्धान. मेरठः आर. लाल बुक डिपो.
5. सारस्व्त, एम. (2012). शिक्षा मनोविज्ञान की रुपरेखा. लखनऊः आलोक प्रकाशन.
6. पाठक, पी.डी. (2011). शिक्षा मनोविज्ञान. आगराः अग्रिाल पबलिकेशन्स.
7. गुप्ता, एस.पी. (2009). आधुनिक मापन एवं मल्यांकन. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन.
8. कपिल, एच.के. (2000). सांख्यिकी के मूल तत्व. आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर.
9. राय, पी.एन. (1999). अनुसन्धान परिचय. आगराः अगग्राल पमब्लिकेशन्स